Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.27
https://www.srjis.com/issues_data/223
*PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL OCT-NOV 2023, Vol-11/60*

# सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की स्वच्छता आदतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन

**डॉ. ऋषि केश बहादूर**
सहायक प्राध्यापक, पटना ट्रेनिंग कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना

**Paper Received On:** 25 September 2023
**Peer Reviewed On:** 21 October 2023
**Published On:** 01 December 2023

***Abstract***

जनसंख्या वृद्धि के साथ ही साक्षरता के आँकड़ों में भी समानुपाती क्रम में वृद्धि होती जा रही हैं। वर्तमान में ज्वलंत समस्याओं का निराकरण साक्षरों की संख्या बढ़ाने से नहीं, अपितु शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन से होगा। गुणात्मक परिवर्तन का क्षेत्र अतिव्यापक है जिसका एक मुख्य घटक स्वच्छता है। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ गुणात्मक शिक्षा में स्वच्छता भी सहभागी हो, ऐसे प्रयास अपेक्षित है। अपेक्षाकृत गुणवत्तापूर्ण शिक्षित व्यक्ति की अपनी योग्यता को व्यक्ति हित के स्थान पर सार्वजानिक हित में उपयोग करें तो मानवीय मूल्यों को बचाया जा सकता है। भारत में स्वच्छता की खराब स्थिति को इस तथ्य से जाना जा सकता है कि भारत एक ऐसा देश है, जिसमें सबसे बड़ी संख्या में लोग खुले में मल त्यागते हैं। अतः अब यह उचित समय है, जब इस तथ्य का आकलन किया जाए कि स्वच्छ विद्यालय कार्यक्रम से स्वच्छ एवं स्वस्थ विद्यालय वातावरण निर्माण का लक्ष्य किस स्तर तक प्राप्त किया जा सका है एवं विद्यार्थियों में स्वच्छतापूर्ण आदतों का स्वतः स्फूर्त विकास हुआ है या नहीं।

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि अपनाई गई है जिसके लिए पटना जिले के 05 सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में से प्रत्येक से 25 विद्यार्थी (कुल 125) का चयन किया गया। आँकड़ों का संग्रहण करने हेतु स्व-निर्मित स्वच्छता आदतों से सम्बंधित प्रश्नावली मापनी का उपयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों के 60% विद्यार्थी व्यक्तिगत स्वच्छता पर ध्यान देते है जबकि 40% विद्यार्थी व्यक्तिगत स्वच्छता पर ध्यान नहीं देते है। साथ ही सरकारी विद्यालयों के 62.4% विद्यार्थी घरेलू स्वच्छता पर ध्यान देते है जबकि 37.6% विद्यार्थी घरेलू स्वच्छता पर ध्यान नहीं देते है और सरकारी विद्यालयों के 65.6% विद्यार्थी विद्यालय परिवेश में स्वच्छता पर ध्यान देते है जबकि 34.4% विद्यार्थी विद्यालय परिवेश में स्वच्छता पर ध्यान नहीं देते है।

**मुख्य बिंदु:** सरकारी विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय, स्वच्छता आदत

*Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language*

## परिचय

वर्तमान परिवेश में मानव ने शिक्षा के महत्त्व के साथ-साथ ज्ञान के महत्त्व को अनिवार्य आवश्यकता के रूप में अंगीकार किया है। शिक्षा वह उपकरण है जिससे बालक को तराशकर उसमें हीरे सी चमक पैदा की जाती है। तराशने वाले कारीगरों में सर्वाधिक प्रभावशाली भूमिका शिक्षकों की होती है। बालकों में नए तौर तरीके और नई बातें सीखने की प्रवृति होती है, बालकों के लिए विद्यालय, शिक्षा और ज्ञानार्जन का उपर्युक्त स्थान है, विद्यालय स्तर पर बालकों को सही जानकारी एवं संसाधन उपलब्ध करा कर स्वच्छता का व्यवहार अपनाने की आदत डाल दी जाए तो वे मजबूत एवं स्वस्थ नागरिक बनेंगे। संस्कारों के प्रस्फुटन के लिए विद्यालय आदर्श स्थान होता है, जो समुदाय के लिए भी स्वस्थ्य वातावरण की स्वच्छता के प्रेरणा के स्रोत होते है। जनसंख्या वृद्धि के साथ ही साक्षरता के आँकड़ों में भी समानुपाती क्रम में वृद्धि होती जा रही हैं। वर्तमान में ज्वलंत समस्याओं का निराकरण साक्षरों की संख्या बढ़ाने से नहीं, अपितु शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन से होगा। गुणात्मक परिवर्तन का क्षेत्र अतिव्यापक है जिसका एक मुख्य घटक स्वच्छता है। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ गुणात्मक शिक्षा में स्वच्छता भी सहभागी हो, ऐसे प्रयास अपेक्षित है। अपेक्षाकृत गुणवत्तापूर्ण शिक्षित व्यक्ति की अपनी योग्यता को व्यक्ति हित के स्थान पर सार्वजानिक हित में उपयोग करें तो मानवीय मूल्यों को बचाया जा सकता है।

स्वच्छ परिवेश प्रत्येक मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। इस हेतु जनसामान्य में स्वच्छता की आदतों का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन आदतों का बाल्यावस्था से ही अगर विकास हो तों आने वाले समय में इसका अत्यधिक लाभ प्राप्त हो सकता है। इस उद्देश्य से "स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम", "स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय" कार्यक्रम सम्पूर्ण देश में साथ-साथ विद्यालयों में भी लागू किया गया है। इसके माध्यम से विद्यालय से प्रारंभ होने वाली अच्छी आदतें कालांतर में सामाजिक उन्नयन का माध्यम बनेगी और सामुदायिक स्वास्थ्य को बेहतर बनने में सहायक बनेगी। बच्चें सुखद भविष्य के नागरिक है। जब वे मानसिक व शारीरिक रूप से स्वास्थ्य होंगे तब ही स्वास्थ्य राज्य व देश की कल्पना की जा सकती

है। हमारे शहरी व ग्रामीण परिवेश में दूषित पर्यावरण के कारण वह वर्ग ही अधिक प्रभावित होता है जो बिमारियों से लड़ने में अधिक सक्षम नहीं होता, जैसे- बच्चें, बुढ़े इत्यादि।

स्वच्छता मानव के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य तथा प्रतिष्ठा के मूल में है। अपर्याप्त स्वच्छता विश्व भर में बीमारी का प्रमुख कारण होती है और स्वच्छता में सुधार घर-बार और संपूर्ण समुदाय दोनों में स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण हितकर प्रभाव डालता है। पर्याप्त जल और स्वच्छता सेवाओं के साथ एक स्वच्छ वातावरण से शहरी स्थायित्व को समर्थन, सामाजिक संतुलन, आर्थिक विकास और जन सेवाओं का अधिकार देना अपेक्षित होता है। इस प्रकार स्वच्छता बेहतर जन स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण घटक है और विकासात्मक मुद्दों तथा पर्यावरण संपोषण और सामाजिक अंतर्वेशन जैसी चुनौतियों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है।

**स्वच्छता का महत्त्व**

जीवन में स्वच्छता से तात्पर्य स्वस्थ होने की अवस्था से भी है। स्वच्छता एक अच्छी आदत है जो हमारे जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाती है । यह हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है । हमारे लिए शरीर की भी स्वच्छता बहुत जरूरी है, जैसे- रोज नहाना, स्वच्छ कपड़े पहनना, दांतों की सफाई करना, नाखून काटना, आदि । इसके लिए हमें प्रतिदिन सुबह जैसे ही हम सो कर उठते हैं, अपने दांतों को साफ करना चाहिए। चेहरा, हाथ पैर धोना चाहिए। साथ ही स्नानादि और दैनिक क्रियाओं को समय पर पूर्ण करना चाहिए। स्वस्थ रहने और शांति से जीवन जीने का अच्छा गुण है । इसके लिए घर के बड़े-बुजुर्गों को और माता -पिता और को अपने बच्चों में इस आदत को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि वे स्वच्छता के महत्व को समझें।

**भारत में स्वच्छता**

भारत में स्वच्छता की खराब स्थिति को इस तथ्य से जाना जा सकता है कि भारत एक ऐसा देश है, जिसमें सबसे बड़ी संख्या में लोग खुले में मल त्यागते हैं। डब्ल्यूएचओ/यूनीसेफ की ज्वाइंट मॉनीटरिंग प्रोग्राम (जेएमपी) रिपोर्ट, 2014 के अनुसार विश्व में खुले में शौच करने वाले एक बिलियन लोगों में से 85 प्रतिशत लोग केवल दस देशों में रहते हैं। खुले में मल

त्यागने वाले 597 मिलियन अथवा विश्व की 59.7 प्रतिशत जनसंख्या भारत में है। इस तथ्य के बावजूद कि 1990 और 2012 के बीच 291 मिलियन लोगों को उन्नत स्वच्छता तक पहुंच प्राप्त हुई है, अभी भी देश में 792 मिलियन लोगों की उन्नत स्वच्छता सुविधाओं तक पहुंच नहीं है। वर्ष 2012 के राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण (एनएसएस) के अनुसार ग्रामीण भारत में 59.4 प्रतिशत तथा शहरी भारत में 8.8 प्रतिशत घरों में शौचालय सुविधाएं नहीं हैं। एमडीजी इंडिया कंटरी रिपोर्ट 2014 में इंगित किया गया है कि यद्यपि शहरी क्षेत्रों में 2015 के सहस्राब्दि विकास लक्ष्य प्राप्त कर लिए जाएंगे किंतु ग्रामीण क्षेत्रों में प्रगति पिछड़ रही है।

जल एवं स्वच्छता कार्यक्रम द्वारा "भारत में अपर्याप्त स्वच्छता के आर्थिक प्रभाव" विषय पर कराए गए अध्ययन के अनुसार, साफ सफाई का पूर्ण ध्यान न रखे जाने के कारण भारत को प्रतिवर्ष 2.44 ट्रिलियन रु. (53.8 बिलियन यू.एस. डॉलर) के बराबर आर्थिक दुष्प्रभावों का सामना करना पड़ता है जो 2006 में भारत के स.घ.उ. के 6.4% के बराबर है। अध्ययन में यह अनुमान लगाया गया है कि इन दुष्प्रभावों में स्वास्थ्य संबंधी आर्थिक प्रभाव सबसे अधिक हैं जो 1.75 ट्रिलियन रुपये (38.5 बिलियन यू.एस. डॉलर) के बराबर है। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य संबंधी प्रभावों में डायरिया सबसे अधिक है जो कुल प्रभाव का 2/3 है, तत्पश्चात् एक्यूट लोअर रेसपीरेटरी इन्फैक्शन है जो स्वास्थ्य संबंधी प्रभावों का 12% है।

**अध्ययन का औचित्य**

स्वच्छता वर्तमान जीवन शैली का महत्वपूर्ण घटक है। इस शोध में स्वच्छता से सम्बंधित सभी पक्षों और उत्पन्न होने वाली समस्याओं का गहन अध्ययन किया गया है। स्वच्छ विद्यालय कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यालयी वातावरण को स्वच्छ व शुद्ध करना, छात्रा-छात्राओं में स्वच्छतापूर्वक रहने की आदतों का विकास कर विद्यार्थियों के ठहराव में वृद्धि करना और शैक्षिक उपलब्धियों में गुणात्मक सुधर करना था। अतः अब यह उचित समय है, जब इस तथ्य का आकलन किया जाए कि उक्त कार्यक्रम से स्वच्छ एवं स्वस्थ विद्यालय

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

वातावरण निर्माण का लक्ष्य किस स्तर तक प्राप्त किया जा सका है एवं विद्यार्थियों में स्वच्छतापूर्ण आदतों का स्वतः स्फूर्त विकास हुआ है या नहीं।

## प्रयुक्त शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि अपनाई गई है, जिसमें वर्तमान क्रिया की सार्थकता सिद्ध करने या वर्तमान क्रिया में सुधार के लिए वर्तमान दशा से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करते हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने पटना जिले के प्राथमिक स्तर के सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों का सर्वेक्षण किया है। इस शोध हेतु शोधकर्त्ता के द्वारा सर्वेक्षण विधि, साक्षात्कार विधि तथा प्रश्नावली विधि का प्रयोग कर आँकड़ों को प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। अंततः इन्हीं आँकड़ों के आधार पर उपर्युक्त समाधान प्रस्तुत किया गया है।

## न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है प्रस्तुत शोध हेतु पटना जिले के 05 सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में से प्रत्येक से 25 विद्यार्थी का चयन किया गया।

**सारणी: सरकारी विद्यालयों में चयनित न्यादर्श**

| क्र.सं. | विद्यालय का नाम | चयनित न्यादर्श | |
|---|---|---|---|
| | | छात्र | छात्रायें |
| 1. | प्राथमिक विद्यालय, हनुमान नगर, पटना | 10 | 15 |
| 2. | प्राथमिक विद्यालय, कंकरबाग, पटना | 14 | 11 |
| 3. | प्राथमिक विद्यालय, दलदली रोड, पटना | 12 | 13 |
| 4. | प्राथमिक विद्यालय, दरियापुर, पटना | 13 | 12 |
| 5. | प्राथमिक विद्यालय, इंद्रा नगर, पटना | 12 | 13 |
| | योग | 61 | 64 |

## शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए आँकड़ों का संग्रहण करने हेतु स्व-निर्मित स्वच्छता आदतों से सम्बंधित प्रश्नावली मापनी का उपयोग किया गया है।

**विश्लेषण**

सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की स्वच्छता आदतों का विभिन्न आयामों के अनुसार प्रतिशत मान

| **क्र. सं.** | **आयाम** | **विद्यार्थियों की स्वच्छता आदतों का मध्यमान** | | | | **कुल** | **प्रतिशत** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | **व्यक्तिगत स्वच्छता** | हाँ | | नहीं | | 125 | 45% |
| | | 75 | 60% | 50 | 40% | | |
| 2 | **घरेलू परिवेश से जुड़ी स्वच्छता** | हाँ | | नहीं | | 125 | 25% |
| | | 78 | 62.4% | 47 | 37.6% | | |
| 3 | **विद्यालय परिवेश से जुड़ी स्वच्छता** | हाँ | | नहीं | | 125 | 30% |
| | | 82 | 65.6% | 43 | 34.4% | | |
| | **कुल** | 235 | 62.7% | 140 | 37.3% | 375 | 100% |

ऊपर वर्णित तालिका एवं ग्राफ से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों के 75 विद्यार्थी व्यक्तिगत स्वच्छता से जुड़े प्रश्नों का जबाव हाँ में देते है जबकि 50 विद्यार्थी व्यक्तिगत स्वच्छता से जुड़े प्रश्नों का जबाव नहीं में देते है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों के 60% विद्यार्थी व्यक्तिगत स्वच्छता पर ध्यान देते है जबकि 40% विद्यार्थी व्यक्तिगत स्वच्छता पर ध्यान नहीं देते है। सरकारी विद्यालयों के 78 विद्यार्थी घरेलू स्वच्छता से जुड़े प्रश्नों का जबाव हाँ में देते है जबकि 47 विद्यार्थी घरेलू स्वच्छता से जुड़े प्रश्नों का जबाव नहीं में देते है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों के 62.4% विद्यार्थी घरेलू स्वच्छता पर ध्यान देते है जबकि 37.6% विद्यार्थी घरेलू स्वच्छता पर ध्यान नहीं देते है। सरकारी विद्यालयों के 82 विद्यार्थी विद्यालय परिवेश में स्वच्छता से जुड़े प्रश्नों का जबाव हाँ में देते है जबकि 43 विद्यार्थी विद्यालय परिवेश में स्वच्छता से जुड़े प्रश्नों का जबाव नहीं में देते है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों के 65.6% विद्यार्थी विद्यालय परिवेश में स्वच्छता पर ध्यान देते है जबकि 34.4% विद्यार्थी विद्यालय परिवेश में स्वच्छता पर ध्यान नहीं देते है।

*Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language*

## निष्कर्ष

- सरकारी विद्यालयों के 60% विद्यार्थी व्यक्तिगत स्वच्छता पर ध्यान देते है जबकि 40% विद्यार्थी व्यक्तिगत स्वच्छता पर ध्यान नहीं देते है।
- सरकारी विद्यालयों के 62.4% विद्यार्थी घरेलू स्वच्छता पर ध्यान देते है जबकि 37.6% विद्यार्थी घरेलू स्वच्छता पर ध्यान नहीं देते है।
- सरकारी विद्यालयों के 65.6% विद्यार्थी विद्यालय परिवेश में स्वच्छता पर ध्यान देते है जबकि 34.4% विद्यार्थी विद्यालय परिवेश में स्वच्छता पर ध्यान नहीं देते है।
- इन सभी आयामों को दृष्टिगत रखते हुए शोध से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सरकारी विद्यालयों के 62.7% विद्यार्थी स्वच्छता के प्रति जागरूक है और स्वच्छता पर ध्यान देते है जबकि 37.3% विद्यार्थी स्वच्छता के प्रति जागरूक नहीं है और स्वच्छता पर ध्यान नहीं देते है।

## उपसंहार

ऊपर वर्णित निष्कर्ष से यह स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में स्वच्छता के आदतों के प्रति जागरूकता लाने की आवश्यकता है। सरकारी विद्यालयों में स्वच्छता के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता लाने के लिए शिक्षकों, विद्यालय प्रवंधन, माता-पिता तथा सरकारी प्रयास आवश्यक है। शिक्षक को विद्यार्थियों को स्वच्छता की शिक्षा अवश्य देनी चाहिए। साथ ही शिक्षकों को स्वच्छता का संदेश घर-घर पहुंचाने में अपनी भूमिका निर्वहन करना चाहिए। शिक्षकों की सहभागिता व जनसहयोग से बड़े से बड़े लक्ष्य को सरलता से पाया जा सकता है। अभिभावकों को भी स्वच्छता की आदतों के प्रति ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि विद्यालय के पश्चात् विद्यार्थी सबसे अधिक समय गृह-परिवेश में ही व्यतीत करते है। अत: कह सकते है कि सामूहिक प्रयास से ही विद्यार्थियों में जागरूकता लायी जा सकती है।

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

## संदर्भ सूची

अलिजेंड्रो क्रोसियो रोजेर्स (2010). "ए केस स्टडी ऑफ़ द चिल्ड्रेन पालिसी एजेंडा फॉर डिसएडवांटेजड प्राइमरी स्कूल: मीटिंग देयर चैलेंजस", इंडियन जर्नल ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी, वोल्यूम-41, पृष्ठ सं. 25-29।

गोस्वामी (2003). महिला एवं बाल विकास, आई.ए.एस.ई., डीम्ड यूनिवर्सिटी, गाँधी विद्या मंदिर।

सिंह, जे.डी. (2014). शाला जल स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम का विद्यालय का वातावरण एवं विद्यार्थियों की स्वच्छता सम्बंधित आदतों का प्रभाव, शिक्षा चिन्तन, त्रिमूर्ति संस्थान, कानपुर, अंक: 8-9, वाल्यूम 3।

गोपालन, सी. (1989). स्टडी ऑफ द करंट स्टेटस एंड रेलीवेंस ऑफ कम्युनिटी न्युट्रीशन्स एंड हेल्थ प्रोग्राम्स थ्रू द हेल्थ वेफयर सिस्टम, इन्डीपेन्डेन्ट स्टडी. न्युट्रीशन फाउन्डेशन ऑफ इंडिया, नयी दिल्ली।

भारत सरकार. (2003). टुवर्ड्स टोटल सेनीटेशन एंड हाइजीन-ए चेलेंज फॉर इंडिया, कन्ट्री पेपर सीरीश, नयी दिल्ली।

धन शेखरन, जी. (1990). प्राइमरी व मिडिल स्कूल के अध्यापकों की बच्चों के स्वास्थ्य उन्नयन के प्रति जागरूकता का अध्ययन, शिक्षा चिन्तन त्रिमूर्ति संस्थान, कानपुर, अंक -7, वाल्यूम 2।

भट्टाचार्य, एस. (1992). छात्रों की उपलब्धि तथा समुदाय के सदस्यों का पोषण, स्वास्थ्य तथा वातावरणीय स्वच्छता के प्रति जागरूकता का अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, लखनऊ, अंक - 2, वाल्यूम 18।

युनीसेफ़ (1998). ए मैनुअल ऑन स्कूल सेनिटेशन एडं हाईजीन, वाटर, एन्वाइरन्मेंट एंड टेक्नीकल गाईडलाइन सीरीज-5, न्यूयार्क।

रिपोर्ट्स ऑन नेशनल वर्कशॉप ऑन स्कूल वॉटर एंड सेनीटेशन टुवर्ड्स हेल्थ एंड हाइजीन (2001). इंडिया कन्ट्री ऑफिस।

स्कूल वॉटर सेनीटेशन एंड हाइजीन एजुकेशन प्रोग्राम (एस.डब्ल्यु.एस.एच.ई.) (2005). डिस्ट्रीक्ट प्लान ऑफ एक्शन, डिस्ट्रीक्ट प्राइमरी एजुवेफशन प्रोग्राम एंड सर्व शिक्षा अभियान, श्रीगंगानगर।

परमेश्वरन अय्यर, स्वच्छ भारत क्रांति

महिपाल, भारत में स्वच्छता अभियान कार्यनीति और क्रियान्वयन

एम.एच.आर.डी. भारत सरकार, स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय एक राष्ट्रीय मिशन, यूनेस्कों

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language